मुझे ज्ञानामृत मिल गयी

✻ ब्रह्माकुमार सुरेन्द्र कुमार वर्मा, रीवा (म.प्र.)

मैं बचपन से ही आध्यात्मिक ज्ञान पढ़ने में रुचि रखता था। जहाँ कहीं भी जाता था, यदि कोई किताब दिख जाती थी तो उठाकर पढ़ने लगता था और उसमें खो जाता था। उस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए मैं झूठ भी बोल देता था कि मैंने नहीं ली, मेरे से खो गई या आप मुझसे इसके बदले दूसरी ले लो। मेरे सारे रिश्तेदार मुझसे परेशान थे कि यह कैसा लड़का है, हमेशा कोई न कोई अच्छी किताब उठा ले जाता है और कहता है, मुझसे खो गई।

पत्रिका में लिखी हर बात अच्छी लगी

मुझे क्या पता था कि मेरी यह आदत मुझे उससे मिला देगी जिसे सारी दुनिया खोज रही है। बात दिनांक 18.01.2011 की है। तब मैं ईश्वरीय ज्ञान से दूर था, सारा दिन टी.वी. देखता था, लड़ाई-झगड़ा करता था, तला-भुना खाता था। मेरी यही आदत मुझे पाण्डेय किराना स्टोर ले गई। मैं नमकीन खरीदने लगा तो जनवरी माह की ज्ञानामृत पत्रिका वहाँ पड़ी देखी जिसके मुखपृष्ठ पर बापदादा का चित्र बना था और लिखा था, ''आ जाओ लाडलो अब अव्यक्त हैं इशारे, बाबा खड़े हैं वतन में बाँहें पसारे।'' मैंने अपनी आदत अनुसार अंकल से पूछा, यह पत्रिका कहाँ से आती है? उन्होंने कहा, पता नहीं, दो सफेद वस्त्रधारी बहनें पहुँचा जाती हैं। मैं वहीं खड़ा होकर पत्रिका के पन्ने उलटता-पलटता रहा। फिर सोचा, अब पत्रिका ले चलते हैं अपने घर अंकल को बिना बताये, क्योंकि मांगेंगे तो कहीं अंकल मना न कर दें। पत्रिका एकदम नई थी। अंकल ने मेरे मन की बात जान ली और कहा, पढ़ना है? मैंने कहा, हाँ। उन्होंने कहा, ले जाओ, कल सुबह वापस दे जाना। अब 19.01.2011 को सुबह 5 बजे पत्रिका पढ़ी, पढ़ते-पढ़ते पत्रिका में लिखी हर बात अच्छी लगने लगी। मैंने सोचा, अब क्या करें, इसे लौटाना पड़ेगा। फोटो कॉपी में तो पैसा ज्यादा लगेगा। फिर मैंने देखा, उस की कीमत सात रुपये लिखी थी। मैंने सोचा, क्यों न पत्रिका खरीद ली जाये लेकिन यह तो पता नहीं था कि पत्रिका कहाँ से खरीदी जा सकती है। देखते ही देखते मुझे पत्रिका के अन्दर रसीद मिल गई जिस पर लिखा था, ''प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, झिरिया, रीवा''। मुझे बेहद आंतरिक खुशी हुई, दोपहर

एक बजे मैं सेवाकेन्द्र पर पहुँच गया।

बाबाओं के बाबा से परिचय

जाते ही एक भाई ने, 'आप आत्मा हैं' वाला पोस्टर समझाना प्रारम्भ किया। मुझसे पूछा, आप कौन हो? मैंने कहा, मैं सुरेन्द्र हूँ। उन्होंने कहा, यह तो आपके शरीर का नाम है। मैंने आश्चर्य से कहा, शरीर का नाम? फिर उन्होंने समझाया कि आप कहते हो, मेरा हाथ, मेरा पैर; मैं पैर, मैं हाथ नहीं कहते हो। मुझे समझ में आ गया कि मैं हाथ-पैर से कार्य लेने वाली आत्मा हूँ। फिर मैं ज्ञानामृत का सदस्य बन गया। मुझे कहा गया कि आप सात दिन का कोर्स कर लो, जो नि:शुल्क है। कुछ दिनों के बाद मैंने कोर्स प्रारम्भ किया। कोर्स करते-करते प्यारे शिवबाबा से मेरा परिचय हो गया। पहले मुझे लगता था कि जैसे रामदेव बाबा, निर्मल बाबा हैं ऐसे ही ये

भी कोई शरीरधारी बाबा होंगे, पर कोर्स के बाद पता पड़ा कि ये तो बाबाओं के बाबा परमपिता शिवबाबा हैं।

जीवन हुआ धन्य-धन्य

मैंने तो कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि पत्रिका ले लेने वाली मेरी यह बुरी आदत एक दिन मुझे विश्व रचयिता परमपिता परमात्मा शिवबाबा से मिला देगी। मैं बाबा का पक्का बच्चा बन रोज़ाना सुबह 6 बजे सेवाकेन्द्र पर जाकर राजयोग का अभ्यास करने लगा, मुरली सुनने लगा। इसके बाद मैंने शान्तिवन के विशाल डायमंड हाल में अपने बिछड़े हुए बापदादा से मंगल मिलन मनाया। सुख-शान्ति के गहन प्रकंपन मेरे अंतर्मन की गहराइयों को छूने लगे। मेरा जीवन धन्य-धन्य हो गया। दिल में यही गीत बज रहा था, ''तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है, ज़मीं तो ज़मीं आसमां पा लिया है।''

उस दिन से आज तक मैं बेफिक्र बादशाह बनकर जीवन जी रहा हूँ और बाबा की हर श्रीमत मेरे लिये है, यह समझकर चलता हूँ। मैं अपने प्यारे बाबा, मीठे बाबा, रहम दिल बाबा, रूहानी साजन, खुदा दोस्त का पद्मापद्म बार दिल से शुक्रिया करता हूँ। ज्ञानामृत पढ़ने से आत्मा को शक्ति व शान्ति प्राप्त होती है तथा मनोबल व व्यक्तित्व ऊपर उठता है। ज्ञानामृत की जितनी तारीफ की जाए उतनी कम है क्योंकि यह पत्रिका भगवान से मिलाती है, कौड़ी से हीरा, रोडपति से करोड़पति, भिखारी से अधिकारी, बेगर से प्रिंस बनाती है। यह सोचकर मैं खुश होता हूँ कि–

कैसे मुझे ज्ञानामृत मिल गई, किस्मत पे आये न यकीन,
तुम हो सुकून, तुम हो जुनून, क्यों पहले न आई तुम।
मैं तो सोचता था कि ऊपर वाले को फुर्सत नहीं,
फिर भी तुम्हें बनाके वो मेरी नज़र में चढ़ गया।
हर पल ज़िन्दगी चमकदार हो गई,
रिम-झिम मलहार हो गई।
मुझे आता नहीं किस्मत पे अपने यकीन,
कैसे मुझको ज्ञानामृत मिल गई।

❖

वरदान बन गये वे शब्द

ब्र.कु.वीरेन्द्र मिश्र, लखनऊ (गोमती नगर)

मेरा अलौकिक जन्म दुबई में हुआ। वर्ष 1997 में दादी जानकी जी का तीन दिनों के लिए दुबई आना हुआ था। मुरली क्लास के बाद दादी जी ने कहा कि जिस किसी को किसी तरह की समस्या हो, कल लिखकर लाना, उसे मधुबन में बाबा के आगे रखेंगे, वह हम सबका बाप है, सब ठीक कर देगा। मैं मधुबन ज़रूर हो आया था लेकिन दादियों या दीदियों – किसी से भी दृष्टि नहीं ले पाता था, मुझे अन्दर ही अन्दर हीनता महसूस होती थी। मैंने अपनी यह कमज़ोरी पत्र में लिखी और संकोचवश अपना नाम नहीं लिखा कि कहीं दादी जी सबके सामने पढ़ न दें। दूसरे दिन क्लास समाप्त हो गयी, मैं इन्तज़ार कर रहा था कि दादी जी अब कहेंगी कि जिस भी भाई या बहन ने बाबा को पत्र लिखा है वह दे मगर ऐसा नहीं हुआ। प्रसाद बँटने ही वाला था, मैंने हिम्मत कर दादी जी को पत्र की याद दिलाई। तब दादी जी ने पूछा, कौन-कौन पत्र लिखकर लाये हैं? मेरे सिवाय और कोई नहीं लिख लाया था (दादी जी ने ना तो पत्र पढ़ा और ना ही पढ़वाया, 'पत्र बाबा के नाम है, वे ही पढ़ेंगे' – ऐसा कह मेरी हिम्मत और बढ़ा दी)। दादी जी ने मुझे वरदान दिया कि अभी से बाबा तुम्हारी (लिखी हुई) मनोकामना पूर्ण करता है और प्यार भरी दृष्टि देकर टोली दी। मैंने उसी वक्त महसूस किया कि पहले मैं आँखों से आँखें नहीं मिला पाता था, आज भरपूर दृष्टि ली। उस अनमोल वरदान ने कितने चमत्कार किये, वे मैं चन्द शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। आप सभी से यही अनुरोध कर सकता हूँ कि जो भी कमी-कमज़ोरी है उसे दिल से बाबा के आगे रखें, बाबा अवश्य खत्म कर देंगे। ❖